tापमान
अधिकतम 28.1 डिग्री
न्यूनतम 8.5 डिग्री

हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

9 जीवन में सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत ...

9 सोनीपत हादसे ने उजाड़े कई घर, रोहतक के गांवों ...

DUHAN PUBLIC RESIDENTIAL SCHOOL
Run by : AAKASHDEEP DUHAN SCIENCE INSTITUTE
C.B.S.E. AFFILIATION NO. 530982

दुहन पब्लिक रजिडेंसियल स्कूल, जसिया/आकाशदीप दुहन साइंस इंस्टीट्यूट, रोहतक ने 10+2 साईंस में रचा इतिहास तीन बार हरियाणा और पांच बार जिला टॉप किया।

Free REGISTRATION FEE

SCHOLARSHIP Cum ADMISSION TEST on
SUNDAY, 22ND FEBRUARY 2026
Timing : 11:00 am to 1:00 pm
at

Syllabus PREVIOUS CLASS BASIC

CLASS 1ST TO 9TH & 11TH

Scan Now

SCHOOL CAMPUS, JASSIA
Duhan Public School
Jassia Gohana Road,
Rohtak (HR.)
9253183528, 9350784933

AAKASHDEEP DUHAN INSTITUTE
Basant Vihar, Gali No. 1,
Sonipat Road, Rohtak
9416148363, 9996059603

AAKASHDEEP DUHAN SCIENCE INSTITUTE
KATH MANDI, ROHTAK
Director : 9416148363
Center Head : 9466903708
Co-ordinator : 7056765951

FREE DEMO CLASSES
ONLY FOR 11TH CLASS

Main Features

Prize	Amount	Score
1st PRIZE	₹51000	GET 100% SCORE
2nd PRIZE	₹41000	GET 90% SCORE
3rd PRIZE	₹31000	GET 80% SCORE
4th PRIZE	₹21000	GET 70% SCORE
5th PRIZE	₹11000	GET 60% SCORE
6th PRIZE	₹5100	GET 50% SCORE
7th PRIZE	₹4100	GET 40% SCORE
8th PRIZE	₹3100	GET 30% SCORE
9th PRIZE	₹2100	GET 20% SCORE
10th PRIZE	₹1100	GET 10% SCORE

Note : The scholarship prize amount received will be adjusted against the fees for the Session 2026-27
NOTE : The final decision will be that of the management.

* Each participant will be provided with transportation by the school for scholarship test.
* Free demo classes for 3 days.
* To avail all these benefits, please fill the given registration form with student's name, father's name, phone number and village name in clear letters, scan it and send it to the given whatsapp number.

IIT/JEE ADVANCED 2024 में दुहन पब्लिक रेजिडेंशियल स्कूल के चार बच्चों ने मारी बाजी

IIT/JEE MAINS QUALIFIED 2024 आकाशदीप दुहन साइंस इंस्टीट्यूट के 16 छात्रों में से 15 ने क्वालिफाइड किया

NEET/JEE SELECTION 2025 IN GOVT. MEDICAL COLLEGE

LAVANYA SAINI – Agartala Govt. Medical College, Agartala, Kunjaban, Agartala, Tripura West, Tripura – Rank : 22744 NEET SCORE -532
SACHIN – (Artificial Intelligence) IIT GUHATI-2025
TANNU NAIN – COLLEGE - PGIMS, ROHTAK MBBS – Rank : 5704
JEE-2025 QUALIFIED – VIR HOODA 94%, ANKUR 96%, ASHIYA 97.5%

NEET/NDA SELECTION 2024 IN MEDICAL COLLEGE

ANSH DUHAN S/O DR. ASHOK DUHAN – NEET - 2024 (MBBS)
SUHANI DUHAN D/O DR. ASHOK DUHAN – NEET - 2024 (MBBS)
SANJEET BHARDWAJ – NEET - 2024, Rank-5028 – Marks : 685/720
JAI KAUSHIK – NDA - 2024 – SSB QUALIFIED

IIT JEE ADVANCE 2024

ANSH DUHAN – S/o Dr. Ashok Duhan Sir – Rank : 11002
RISHABH – With Dr. Ashok Duhan Sir – CRL : 17548, OBC_NCL:4315
YASH LAMBA – With Dr. Ashok Duhan Sir – CRL : 11852

YURAJ VERMA – With Dr. Ashok Duhan Sir – Score : 660/720 Rank : 21714

ARYAN MALIK – IMUCAT-2024 – MARCHANT NAVY
ANKITA – NEET - 2024 (MBBS) – Marks : 501/720 (SC-A)
SAGAR – JOIN : VETERINARY SURGEON (2024)
Rohit – Superintendent – VPO. DHAMAR – Batch - 2020 – Department : CBSE – Current Posting : CBSE Regional Office, Chennai

DR. ASHOK DUHAN
M.Sc., M.Ed., Ph.D. (Math)
Lecturer in Math (Exp. 18 Years)
(Ex. Lecturer in Jat Institution, Rohtak)
Mob.: 9416148363, 9996059603

DR. SUNITA DUHAN
HOD Chemistry Maharani Kishori Jat Kanya Mahavidyalaya, Rohtak
Ex-Scientist FSL Madhuban Karnal
Mob.: 93507 84933

PRINCIPAL
MRS. ANU RANA
26 Yrs Exp. From Jat Institution
Mob.: 9896205969

SECRETARY
SANTOSH MALIK
Mob.: 9253183528

CENTRE HEAD
SANJAY DUHAN
KATH MANDI, ROHTAK
Mob.: 9466903708

Jassia, Gohana Road, Rohtak
E-mail : duhanpublicschool2@gmail.com

खबर संक्षेप

आरडब्ल्यूए की बैठक में समस्याओं पर मंथन

रोहतक। शहर के सभी सेक्टरों की रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) की एक अहम बैठक शुक्रवार को दोपहर 3:30 बजे सेक्टर-36 सनसिटी क्लब में आयोजित की गई। बैठक में रोहतक के विभिन्न सेक्टरों के साथ-साथ सनसिटी और ओमैक्स सिटी की आरडब्ल्यूए के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। यह बैठक मुख्यमंत्री के गुड गवर्नेंस एसोसिएट (सीएमजीडीए) तनुमय दत्ता की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता ऑल सेक्टर्स आरडब्ल्यूए रोहतक के अध्यक्ष कदम सिंह अहलावत ने की। बैठक में शहर के सभी सेक्टरों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई। आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों ने सफाई व्यवस्था, सड़कों की हालत, पेयजल आपूर्ति, सीवरेज, स्ट्रीट लाइट, आवारा पशुओं की समस्या और अन्य नागरिक सुविधाओं से संबंधित मुद्दे प्रमुखता से उठाए।

सैनी एजुकेशन सोसाइटी ने शहीदों को दी श्रद्धांजलि

रोहतक। सैनी एजुकेशन सोसाइटी के कार्यालय में प्रधान अवनीश कुमार सैनी ने प्रबंध कमेटी के सदस्यों के साथ पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रधान ने नम आंखों से कहा कि 14 फरवरी भारत के इतिहास में काला दिवस के रूप में दर्ज होगा, जब सीआरपीएफ के 40 जवानों को कारों के काफिले पर आतंकवादी हमले में खो दिया गया। प्रधान ने कहा कि इस घटना ने पूरे देश में आक्रोश और दर्द फैलाया, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की साहसिक कार्रवाई से पाकिस्तान पर एयर स्ट्राइक की गई और शहीद सैनिकों के परिवारों का दुख कम किया गया। उन्होंने शहीदों की वीरता और उनके बलिदान को नमन किया। इस अवसर पर सभी उपस्थित सदस्यों ने पुलवामा हमले की कायरतापूर्ण घटना पर विचार साझा किया और इसे निंदनीय बताया।

मुख्य बाजारों व सड़कों पर रात में भी हो रही सफाई

रोहतक। शहर को स्वच्छ, सुंदर और स्वस्थ बनाए रखने के उद्देश्य से नगर निगम रोहतक द्वारा सफाई व्यवस्था को और सुदृढ़ किया जा रहा है। नगर निगम आयुक्त डा. आनंद कुमार शर्मा ने बताया कि निगम की ओर से प्रतिदिन विशेष सफाई अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में मुख्य बाजारों, प्रमुख सड़कों और वार्डों में दिन के साथ-साथ रात के समय भी नियमित सफाई करवाई जा रही है। आयुक्त ने बताया कि शनिवार को वार्ड नंबर 18 में वार्ड सदस्य प्रतिनिधि जितेंद्र रोहिला की उपस्थिति में विशेष सफाई अभियान चलाया गया। इस दौरान सड़कों, गलियों और सार्वजनिक स्थलों की गहन सफाई की गई। उन्होंने कहा कि सफाई कार्य को नगर निगम द्वारा बेहद गंभीरता से लिया जा रहा है। मुख्य बाजारों और व्यस्त मार्गों पर रात के समय सफाई होने से सुबह के समय शहर स्वच्छ दिखाई देता है और दिन में नागरिकों व व्यापारियों को आवागमन में भी सुविधा मिलती है।

प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने वैज्ञानिक सोच का दिया परिचय

- विज्ञान और नवाचार की ओर इंडस स्कूल के बढ़ते कदम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

इंडस पब्लिक स्कूल में विज्ञान और नवाचार को समर्पित भव्य विज्ञान प्रदर्शनी 2026 का सफल आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने अपनी जिज्ञासा, सृजनात्मकता और सार्थक वैज्ञानिक सोच का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अनेक उपयोगी एवं नवाचारी मॉडल प्रस्तुत किए। विद्यालय परिसर पूरे दिन विज्ञानमय उत्साह और रचनात्मक ऊर्जा से सराबोर रहा। प्रदर्शनी में सौर ऊर्जा से संचालित स्मार्ट सिटी, वर्षा जल संचयन प्रणाली, पर्यावरण संरक्षण मॉडल, रोबोटिक्स एवं स्वचालित मशीन, ज्वालामुखी विस्फोट का कार्यशील मॉडल, जल शुद्धिकरण प्रणाली, स्मार्ट ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम, ड्रिप इरिगेशन (सूक्ष्म सिंचाई) मॉडल, भूकंप अलार्म प्रणाली, मानव हृदय की कार्यप्रणाली का मॉडल, ग्रीन हाउस प्रभाव, पवन ऊर्जा उत्पादन मॉडल, तथा प्लास्टिक रीसाइक्लिंग परियोजना विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। विद्यार्थियों ने अपने मॉडलों के माध्यम से वर्तमान समस्याओं के वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करते हुए "विज्ञान मानव कल्याण के लिए" विज्ञान शिक्षिका एवं प्रदर्शनी संयोजक रुबिना, पारुल और रजत के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने कई सप्ताह की मेहनत, शोध और प्रयोगों के बाद अपने मॉडल तैयार किए। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विद्यालय के समस्त स्टाफ का सराहनीय योगदान रहा।अंत में विद्यालय परिवार ने सभी अतिथियों, अभिभावकों और सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव रखते हैं और उन्हें विज्ञान एवं नवाचार की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

रोहतक। इंडस पब्लिक स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी में प्रस्तुति देते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु ने दी बधाई

इस अवसर पर विद्यालय की चेयरपर्सन डॉ. एकता सिंधु ने विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि विज्ञान केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन को बेहतर बनाने का माध्यम है। ऐसे आयोजन बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास और नवाचार की भावना विकसित करते हैं, जो भविष्य के भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।" विद्यालय के प्राचार्य दीपक वशिष्ठ ने कहा कि हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल परीक्षा तक सीमित न रखकर उन्हें खोज, प्रयोग और नवाचार के लिए प्रेरित करना है। आज के ये छोटे वैज्ञानिक ही कल देश का गौरव बनेंगे। उन्होंने सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को इस सफल आयोजन के लिए बधाई दी।

वृद्धावस्था पेंशन को लेकर हो चुकी है काफी फजीहत

खूफिया तंत्र से योजनाओं और घोषणाओं का मांगा अपडेट

अमरजीत एस गिल ▶▶| रोहतक

वृद्धा पेंशन को लेकर प्रदेश में काफी दिनों तक विवाद बना रहा। विपक्ष कहता रहा है कि सरकार ने हजारों बुजुर्गों की पेंशन बंद कर दी है। इसके प्रत्युत्तर में सरकार ने कहा कि किसी की पेंशन नहीं काटी गई है। अब पेंशन का विवाद तो शायद रूक जाएगा। क्योंकि सरकार ने बंद की हुई पेंशन को दोबारा से चालू कर दिया है। इसी बीच सरकार ने जानकारी मांगी है कि सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं के अलावा सरकार द्वारा घोषित दूसरे कार्यों पर जिला स्तर के अधिकारियों ने कितना काम किया है, इस बारे में अपडेट किया जाए। सरकार ने तीन-चार दिन पहले ही खुफिया विभाग को सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन के अलावा अन्य महत्वपूर्ण प्रशासनिक और जमीनी कार्यों का अपडेट देने के निर्देश दिए हैं। इस कदम का उद्देश्य जमीनी स्तर पर प्रशासनिक कार्य क्षमता सुधारना और सरकार को सीधे फीडबैक उपलब्ध कराना है। सरकार को अंदेशा है कि जिला स्तर के अधिकारी सरकारी घोषणाओं पर ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। जिससे लोग परेशान हैं। हालांकि ये भी ध्यान रहे कि वर्तमान समय में सब कुछ हरियाणा सरकार ने केंद्रीयकृत कर दिया है। सरकार की जितनी भी योजनाएं हैं, उनके बारे में जिला स्तर के अधिकारियों को तो ये तक पता नहीं होता है कि कौन कौन व्यक्ति लाभ ले रहे हैं। अधिकारियों के पास जब लोग आते हैं तो वे उनका आधारकार्ड देखकर ही ये बता पाते हैं कि उन्हें योजना का का लाभ मिलना कब और किस वजह से बंद किया गया है।

पूछा-क्या अड़चनें आ रही हैं

खूफिया विभाग को निर्देश दिए गए हैं कि सामाजिक सुरक्षा के लिए चलाई जा रही योजनाओं में लोगों को पेंशन मिल रही हैं या नहीं। पात्र व्यक्तियों को अगर स्कीम का लाभ नहीं मिल रहा है तो इस बारे में अवगत कराया जाए। ताकि उस अवरोध को खत्म किया जाए, जिसकी वजह से अड़चने आ रही हैं। ध्यान रहे कि हरियाणा सरकार वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं, दिव्यांगों, और गरीबों के कल्याण के लिए कई प्रमुख योजनाएं संचालित कर रही है। प्रमुख योजनाओं में बुढ़ापा सम्मान भत्ता, दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री परिवार समृद्धि योजना, विधवा/अविवाहित पेंशन, अंबेडकर आवास नवीनीकरण योजना, चिरायु आयुष्मान भारत, वृद्धावस्था पेंशन, दिव्यांग पेंशन, विवाह शगुन योजना,राशन कार्ड, विधवा पेंशन,मातृत्व लाभ योजना,मेरी फसल मेरा ब्यौरा, आपकी बेटी हमारी बेटी, लाडली सामाजिक सुरक्षा भत्ता और सक्षम युवा योजना समेत 80 से अधिक स्कीम को सरकार चला रही है।

अफसरों से मांगी पिछले छह महीने की जानकारी

योजनाओं के अलावा मुख्यमंत्री तथा उसके सहयोगी मंत्रियों द्वारा भी समय पर घोषणाएं की जाती हैं। घोषणाओं को अमलीजामा प्रशासनिक मशीनरी द्वारा ही पहनाया जाता है। पिछले छह महीने में सरकार ने रोहतक जिले के लिए कितनी घोषणाएं की, उन पर अभी तक अधिकारियों ने कितना काम किया है, ये जानकारी मांगी गई है।

एनएसएस के महत्व के बारे में बताया

रोहतक। राजकीय महाविद्यालय जसिया सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का शनिवार को शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुदेश लाठर द्वारा किया गया। प्राचार्य डॉ. सुदेश लाठर ने एनएसएस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं में सेवा, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती है। उन्होंने स्वयंसेवकों को समाज हित में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। शिविर के प्रथम दिवस सायंकालीन सत्र में स्वयंसेवकों की विभिन्न टीमों का गठन किया गया। इसके साथ ही खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया।

महम। विदाई समारोह में नृत्य करती आर्य स्कूल मदीना की छात्राएं।

आर्य स्कूल मदीना में सीनियर्स को दी विदाई

महम। आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों ने उत्साह, उमंग एवं गरिमामय वातावरण में अपने सीनियर्स को विदाई दी। प्रधानाचार्य अशोक दांगी ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ हवन के साथ किया। करतार शास्त्री ने यज्ञ पुरोहित और बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने यजमान की भूमिका निभाई। अपने प्रेरणादायक संबोधन में प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों को जीवन में अनुशासन, परिश्रम और संस्कारों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के सम्मान में स्वागत गीत, स्लोगन, नृत्य, संगीत एवं विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों दी।

सीके नायडू ट्राफी : राजस्थान ने हरियाणा पर 108 रन की लीड ली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

चौधरी बंसी लाल क्रिकेट स्टेडियम लाहली में सीके नायडू ट्राफी एलीट में शनिवार को हरियाणा व राजस्थान के बीच मुकाबले का दूसरा दिन रहा। राजस्थान ने हरियाणा पर 108 रन की लीड ले ली है। दूसरे दिन का खेल खत्म होने पर राजस्थान ने दूसरी पारी में एक विकेट के नुकसान पर 87 रन बना लिए हैं। राजस्थान के गणेश सुथार गणेश सुथार ने तीन विकेट लिए। दूसरे दिन हरियाणा ने एक विकेट के नुकसान पर 9 रन से आगे खेलना शुरू किया। दूसरे दिन भी टीम की शुरूआत अच्छी नहीं रही। टीम ने 40 रन पर दूसरा, 47 पर तीसर व 59 पर चौथा विकेट गंवा दिया। इसके बाद पार्थ व सर्वेश ने संभलकर बल्लेबाजी की व टीम के स्कोर को 100 के पार पहुंचाया। टीम 130 रन पर सर्वेश के रूप में पांचवा और 131 पर पार्थ का विकेट गंवा दिया। उसके बाद लगातार विकेट गिरते हुए और हरियाणा की पूरी टीम 194 रन पर ऑलआउट हो गई। हरियाणा की ओर से सर्वेश ने 37 व पार्थ ने 36 रन बनाए। राजस्थान की ओर से गर्णश ने तीन, एजी चौहान, एमके और दीपेंद्र ने दो-दो विकेट लिए। राजस्थान ने दूसरी पारी की शुरूआत अच्छी रही और पहले विकेट के लिए 53 रन जोड़े।

सहीराम स्कूल में विदाई पार्टी में दी शानदार प्रस्तुति

महम। द रॉयल ग्रुप ऑफ स्कूल्स द्वारा संचालित महम के सही राम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विदाई पार्टी का आयोजन किया। यह विदाई पार्टी एक शानदार एवं स्मरणीय विदाई पार्टी रही। विद्यालय को रंग-बिरंगी सजावट से सजाया गया, जिससे पूरे वातावरण में उत्साह और उल्लास देखने को मिला। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों, गीत-संगीत तथा प्रस्तुतियों के माध्यम से समारोह को जीवंत बना दिया। बच्चों ने इस आयोजन का भरपूर आनंद लिया और यह पल उनके लिए यादगार बन गया। समारोह के दौरान उपस्थित शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों को उनके शैक्षिक जीवन की उपलब्धियों के लिए शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के अंत में स्कूल निदेशक डॉ. प्रदीप भारद्वाज ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए एक प्रेरणादायक भाषण दिया।

महम। विदाई समारोह में उपस्थित सही राम स्कूल के विद्यार्थी व शिक्षक।

एक साल से काम नहीं कर रहा पेंशन पोर्टल : अभय

रोहतक। इनेलो सुप्रीमो अभय सिंह चौटाला ने भाजपा सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि एक लाख से अधिक बुजुर्गों की पेंशन यह कहकर काट दी कि उन्हें गलत पेंशन बनने की शिकायत मिली है। जबकि एक साल से पेंशन पोर्टल ही काम नहीं कर रहा। अभय चौटाला अपने 63वें जन्मदिन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पहुंचे थे। उन्होंनें कहा कि सरकार ने यह बात प्रेस कांफ्रेंस में मानी थी। उसके बाद कहा गया कि किसी की पेंशन नहीं काटी। अभय चौटाला ने कहा कि बुजुर्गों की सम्मान पेंशन चौधरी देवीलाल ने शुरू की थी। अगर कोई उसकी तरफ ऊंगली करने का काम करेगा तो इनेलो का कार्यकर्ता उसकी ऊंगली काटने का काम करेगा। अभय चौटाला ने कहा कि बुजुर्गों के सम्मान पर आंच नहीं आने देंगे। इसके लिए इनेलो का कार्यकर्ता मजबूती के साथ खड़ा है। साथ ही विधानसभा में पूछेंगे कि किस आधार पर एक लाख 5 हजार बुजुर्गों की पेंशन काट दी। सीएम ने कैसे कहा कि पेंशन इसलिए काट दी कि उनकी मृत्यु हो गई। इनेलो प्रदेश सचिव मंजीत कन्हेली के फार्म हाउस पर आयोजित कार्यक्रम में अभय सिंह चौटाला ने 63 किलो का केक काटा और कार्यकर्ताओं का अभिनंदन स्वीकार किया।

पठानिया पब्लिक स्कूल पेरेंटिंग सत्र में अभिभावकों और शिक्षकों में संवाद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

पठानिया पब्लिक स्कूल और ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार के संयुक्त तत्वावधान में अभिभावकों के लिए पेरेंटिंग सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा के मनोविज्ञान विभाग की प्रमुख डॉ. पायल कंवर चांदेल मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं। सत्र का विषय था "आज के बच्चे को समझना, जिसमें बाल मनोविज्ञान, सामाजिक विकास और प्रभावी पालन-पोषण पर विशेष ध्यान दिया गया। सभागार में लगभग 500 अभिभावकों ने भाग लिया। डॉ. चांदेल ने बच्चों की भावनात्मक और सामाजिक जरूरतों को समझने, उनकी सकारात्मक मानसिकता और स्वस्थ विकास सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने अभिभावकों को यह भी बताया कि कैसे बच्चों के साथ संवाद और सहानुभूति से उनका मनोबल बढ़ाया जा सकता है। कार्यक्रम का मंच संचालन रेशमा मल्होत्रा के निर्देशन में कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा इशिता, मन्नत और हिमांशी ने किया। गेस्ट ऑफ ऑनर डॉ. पुनीत गोयल ने भी अभिभावकों और विद्यार्थियों के सवालों का उत्तर देते हुए उनकी भागीदारी को प्रेरित किया। इस ज्ञानवर्धक सत्र ने अभिभावकों को बच्चों की जरूरतों को समझने और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की।

रोहतक। मैन ऑफ द मैच सचिन को सम्मानित करता कोच। फोटो : हरिभूमि

सुगनी देवी क्रिकेट फाउंडेशन क्लब ने पांच विकेट से जीता मैच

रोहतक। विश्वकर्मा क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए गोयल विंटर क्रिकेट कप 2026 के लीग मुकाबले में लेट सुगनी देवी क्रिकेट फाउंडेशन क्लब ने शानदार प्रदर्शन करते हुए संजू स्टार्स को 5 विकेट से पराजित किया। सचिन जांगड़ा को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। टॉस जीतकर संजू स्टार्स ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया और निर्धारित 20 ओवरों में 6 विकेट के नुकसान पर 163 रन बनाए। संजू स्टार्स की ओर से सचिन जांगड़ा ने 66 रन बनाए, जिसमें 4 चौके और 5 छक्के शामिल थे। उनके अलावा आयुष ने 42 गेंदों पर 62 रन की शानदार पारी खेली। लेट सुगनी देवी क्रिकेट फाउंडेशन क्लब की ओर से में बबलू नायक और ध्रुव ने 2-2 विकेट लिए। 164 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी लेट सुगनी देवी क्रिकेट फाउंडेशन क्लब की टीम ने 18.2 ओवरों में 5 विकेट खोकर 169 रन बनाकर मुकाबला अपने नाम कर लिया। टीम की ओर से आशीष यादव ने 32 गेंदों पर नाबाद 50 रन बनाए, जिसमें 6 चौके शामिल थे। उनके साथ पीयूष सैनी ने भी नाबाद 48 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली और टीम को जीत दिलाई।

विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में रिंग रेस, जलेबी रेस, फ्रॉग रेस, कप एंड बॉल रेस

जॉन वेस्ले कॉन्वेंट के नन्हे मुन्नों ने खेल में दिखाया हुनर

प्रतियोगिताओं का होना छात्रों के लिए जरूरी : डॉ. ममता मलिक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गोहाना रोड स्थित जॉन वेस्ले कॉन्वेंट में कक्षा नर्सरी से पांचवीं तक के छात्रों ने थीम पर वार्षिक खेल दिवस का उत्साहपूर्ण आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत मशाल प्रज्वलन और मार्च पास्ट से हुई, जिसमें इक्वलिटी, पीस, प्रोग्रेस और यूनिटी हाउस ने अनुशासन और टीम भावना का शानदार प्रदर्शन किया। नन्हे छात्रों ने रिंग रेस, जलेबी रेस, फ्रॉग रेस, कप एंड बॉल रेस जैसी मनोरंजक प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। कक्षा 1 से 5 तक के छात्रों ने पर्यावरण जागरूकता से जुड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर प्लास्टिक बैग से परहेज, ऊर्जा की बचत और कार पूलिंग जैसी आदतों का संदेश भी दिया।

विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार से नवाजा

विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान हासिल करने वाले छात्रों को प्रधानाचार्या डॉ. ममता मलिक और निदेशक महोदय ने पदक प्रदान किए। इस वर्ष की "बेस्ट हाउस ट्रॉफी" प्रोग्रेस हाउस को दी गई। प्रधानाचार्या ने कहा कि खेल केवल शारीरिक विकास का माध्यम नहीं हैं, बल्कि टीमवर्क, नेतृत्व और आत्मविश्वास को भी बढ़ाते हैं। कार्यक्रम बच्चों के उत्साह, सकारात्मक सोच और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण साबित हुआ।

एचडी स्कूल बालंद में शिक्षक-अभिभावक गोष्ठी आयोजित

रोहतक। एचडी पब्लिक स्कूल बालंद में इस सत्र की अंतिम शिक्षक-अभिभावक गोष्ठी का आयोजन किया गया। वार्षिक परीक्षा से पूर्व आयोजित इस गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी के दौरान भय और चिंता मुक्त रहने की विधियों से अवगत कराना था। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को सही समय प्रबंधन, मानसिक संतुलन और सकारात्मक सोच के माध्यम से बेहतर प्रदर्शन करने के उपाय बताए। अभिभावकों को परीक्षा पर चर्चा में प्रधानमंत्री द्वारा सुझाए गए महत्वपूर्ण सूत्रों पर ध्यान देने का सुझाव दिया गया। अभिभावकों ने इस पहल को सराहा और विद्यार्थियों के बेहतर प्रदर्शन में सहयोग देने का आश्वासन भी दिया। स्कूल के चेयरमैन जयपाल सिगरोहा ने बच्चों का मनोबल बनाए रखने और उन्हें लगातार प्रोत्साहित करने के लिए सभी शिक्षकों और अभिभावकों का आभार व्यक्त किया।

अभिभावक-शिक्षक बैठक में विद्यार्थियों के अंदर कौशल विकास पैदा करने पर मंथन

द आर्यन ग्लोबल स्कूल में ज्ञान और नवाचार का संगम

ग्यारहवीं एवं बारहवीं के छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

द आर्यन ग्लोबल स्कूल में आज का दिन ज्ञान, नवाचार और कौशल विकास का सुंदर संगम रहा। विद्यालय परिसर में अभिभावक-शिक्षक बैठक कला प्रदर्शनी और कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के छात्रों द्वारा प्रबंध के माध्यम से कौशल सीखने का आयोजन किया गया। अभिभावक-शिक्षक बैठक में छात्रों की प्रगति, सीखने की प्रक्रिया और उनके समग्र विकास पर सार्थक चर्चा हुई। इस संवाद ने अभिभावकों और शिक्षकों के बीच सहयोग और विश्वास को और मजबूत किया। कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं के कॉमर्स छात्रों ने अपनी पाक कला का अद्भुत प्रदर्शन किया और विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजन तैयार कर उन्हें प्रदर्शित किया।

विद्यार्थियों के बनाए व्यंजनों का चखा स्वाद

अभिभावकों और अध्यापकों ने छात्रों के बनाए व्यंजनों का स्वाद चखा और उनकी मेहनत की सराहना की। कला प्रदर्शनी और व्यंजन प्रदर्शन जैसे आयोजनों से बच्चों में रचनात्मकता, संगठन क्षमता और व्यवसायिक कौशल का विकास होता है। इ यह आयोजन विद्यालय की समग्र शिक्षा की सोच को उजागर करता है, जहां शिक्षा के साथ स्वास्थ्य, कला और आधुनिक तकनीकी कौशल को समान महत्व दिया जाता है। इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देते हैं।

तापमान
अधिकतम 28.1 डिग्री
न्यूनतम 8.5 डिग्री

हरिभूमि
रोहतक भूमि

रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

10 शिवम एनक्लेव में आवारा कुत्तों के आतंक ...

10 कॉन्फ्रेंस से चिकित्सा क्षेत्र में नए शोध व उपचार ...

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयंती एवं एलुमनाई अभिनंदन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में की शिरकत

मैं हर युवा का आह्वान करूंगा कि अपनी क्षमता पर भरोसा करें, मेहनत और ईमानदारी के साथ काम करें

पुरानी यादें आज यहां ताजा कर पाया हूं

मेरे करियर की शुरुआत एमडीयू यूनिवर्सिटी से हुई। मुझे इस बात की बहुत ही प्रसन्नता है कि मैं आज इस यूनिवर्सिटी में भारत का मुख्य न्यायाधीश बनने के बाद आ पाया हूं और कुछ पुरानी यादें यहां ताजा कर पाया हूं।

सीजेआई का मंत्र : समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना अत्यंत महत्वपूर्ण

जीवन में सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत अनुशासन और दृढ़ इच्छाशक्ति होना जरूरी

देश में लगातार बढ़ रहे मुकदमे इस बात का सबूत हैं कि जनता को न्याय प्रणाली पर बहुत ज्यादा विश्वास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

मेरे करियर की शुरुआत एमडीयू यूनिवर्सिटी से हुई। मुझे इस बात की बहुत ही प्रसन्नता है कि मैं आज इस यूनिवर्सिटी में भारत का मुख्य न्यायाधीश बनने के बाद आ पाया हूं और कुछ पुरानी यादें यहां ताजा कर पाया हूं। ऐसा कहना है भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) जस्टिस सूर्यकांत का। उन्होंने शनिवार को महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयंती एवं एलुमनाई अभिनंदन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने कहा कि इस पद तक पहुंचना अपने आप में एक संघर्ष था। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारण, कड़ी मेहनत, अनुशासन और लक्ष्य प्राप्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति आवश्यक है। उन्होंने कहा यह हरियाणा के लिए ही नहीं, मैं पूरे भारतवर्ष के हर युवा को आह्वान करूंगा कि अपनी क्षमता पर वो भरोसा करे, मेहनत करे, लगन और ईमानदारी से काम करे। चाहे वह न्यायपालिका में है, राजनीति में है, सिविल सर्विसेज में है, किसी भी प्रोफेशन में है, वह अपने उच्चतम पदों तक अपना नाम कमाए। उन्होंने कहा कि आप देखिए जितने मुकदमे इस देश में बढ़ते जाते हैं हर साल, वो अपने आप में इस बात का बहुत बड़ा सबूत है कि भारतीय जनता को न्याय प्रणाली पर बहुत ज्यादा विश्वास है। सीजेआई ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट का नया कॉम्प्लेक्स तैयार किया जा रहा है। इसका पहला चरण इसी वर्ष पूरा होने की उम्मीद है, जबकि बाकी दो चरण बाद में पूरे होंगे।

मदवि ने सूर्यकांत को विशिष्ट पूर्व छात्र अलंकरण से किया सम्मानित

मदवि ने अपने स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर अपने गौरवशाली पूर्व छात्र एवं भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत को विशिष्ट पूर्व छात्र अलंकरण से सम्मानित कर विश्वविद्यालय समुदाय को गौरवान्वित किया। यह सम्मान अत्यंत गरिमा, आदर और गर्व के वातावरण में प्रदान किया गया। समारोह के दौरान प्रो. सुरेंद्र कुमार ने सिटेशन का वाचन किया। सम्मान-पत्र में न्यायमूर्ति सूर्यकांत की प्रेरक जीवन यात्रा का उल्लेख करते हुए बताया गया कि वर्ष 1962 में हरियाणा के हिसार जिले के ग्राम पेटवाड़ से आरंभ हुई उनकी यात्रा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय तक पहुंची, जहां से उन्होंने वर्ष 1984 में विधि स्नातक (एलएलबी) की उपाधि प्राप्त की। यहीं से उन्होंने न्याय-सेवा के पथ पर अपने उज्ज्वल करियर की नींव रखी।

एमडीयू ने शिक्षा, अनुसंधान में पाई उल्लेखनीय उपलब्धियां : प्रो. राजबीर

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि सत्यनिष्ठा, मूल्य और नैतिकता के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये प्रेरक विचार भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के विधि विभाग के पूर्व छात्र न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने विश्वविद्यालय में आयोजित स्वर्ण जयंती एवं एलुमनाई अभिनंदन समारोह में समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने स्वागत भाषण में कहा कि एमडीयू ने पिछले पांच दशकों में शिक्षा, अनुसंधान, खेल, संस्कृति और सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

कुलपति ने स्मृति-चिह्न और अंगवस्त्र भेंट कर किया सम्मानित

कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने विश्वविद्यालय की ओर से मुख्य न्यायाधीश को स्मृति-चिह्न और अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। पंजाब एंड हरियाणा हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस शील नागू का भी अभिनंदन किया गया। कुलसचिव डॉ. कृष्णकांत ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया, जबकि प्रो. शालिनी सिंह और प्रो. आशीष दहिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। निदेशक एलुमनाई रिलेशन्स प्रो. सुमित गिल ने कार्यक्रम का समन्वयन किया। आयोजन में डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. सपना गर्ग और निदेशक युवा कल्याण डॉ. प्रताप राठी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में प्रो. एससी मलिक, भारतीय पुनर्वास परिषद की पूर्व अध्यक्ष डॉ. शरणजीत कौर, पूर्व कुलपति एमडीयू इंजीनियर एच एस चहल, सीबीएलयू कुलपति डॉ. दीप्ति धर्मानी, कुरुक्षेत्र विवि के कुलपति डॉ. सोमनाथ सचदेवा, प्रतिष्ठित शिक्षाविद डॉ. सीता राम व्यास, रविन्द्र सक्सेना उपस्थित रहे।

शिक्षा में विशिष्ट योगदान के लिए बीपीएस महिला विवि कुलपति प्रो. सुदेश छिक्कारा सम्मानित

शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए बीपीएस महिला विवि कुलपति प्रो. सुदेश छिक्कारा, आईजीयू मीरपुर कुलपति डॉ. असीम मिगलानी, पूर्व कुलपति बीपीएस महिला विवि प्रो. आशा कादयान, पूर्व कुलपति सीडीएलयू सिरसा प्रो. विजय कायत को सम्मानित किया गया। लॉ के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए पूर्व शिक्षकों प्रो. रणबीर सिंह, प्रो. केपीएस महलवार, प्रो. पीसी जुनेजा, प्रो. प्रीत सिंह, प्रो. अमर वर्मा को सम्मानित किया गया। न्यायपालिका के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए हाई कोर्ट न्यायाधीशों संजय वशिष्ठ, राजेश भारद्वाज, हरकेश मनुजा, वीरेंद्र अग्रवाल, कुलदीप तिवारी, हरसिमरन सेठी, विकास सूरी, अमन चौधरी, दीपक मनचंदा को सम्मानित किया गया। बार काउंसिल ऑफ पंजाब एंड चंडीगढ़ के पूर्व चेयरमैन विजेंद्र अहलावत तथा इनकम टैक्स अपीलेट ट्रिब्यूनल के वाइस प्रेसिडेंट राजपाल यादव को सम्मानित किया गया। विशिष्ट योगदान के लिए पद्मश्री योगेश्वर दत्त, महाबीर गुड्डू व डॉ. संत राम देसवाल, द्रोणाचार्य अवॉर्डी अरुण दहिया, अर्जुन अवॉर्डी सुनील डबास व राजकुमार सांगवान, सिविल एडमिनिस्ट्रेशन में योगदान के लिए महेंद्र श्योराण, नरहरी बांगड़, मनदीप मान को तथा पुलिस सेवा में योगदान के लिए डॉ. सुमन मंजरी आईपीएस, डॉ. राजश्री आईपीएस तथा राकेश कुमार आर्य आईपीएस को सम्मानित किया गया। चिकित्सा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए डॉ. ध्रुव चौधरी, डॉ. हरप्रीत सिंह, डॉ. मार्कण्डेय आहूजा, डॉ. आदित्य बतरा, डॉ. नवीन मल्होत्रा, डॉ. सुमित सचदेवा, डॉ. शिवकांत को सम्मानित किया गया। बिजनेस एंड लीडरशिप के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए सुधीर जुत्शी, विकास गांधी, नीरज सहगल, अंशुल रूहिल, कर्नल नरेंद्र सिंह, हरविंदर मलिक, राकेश कामरा, सतवंत हुड्डा को तथा युवा एंटरप्रेन्योर के लिए पद्माजय, मनदीप, साहिल, प्रो. आशीष दहिया, प्रो. संदीप मलिक को सम्मानित किया गया। पद्माजय का अवॉर्ड प्रो. शालिनी सिंह ने लिया।

सीजेआई ने एमडीयू में स्वर्ण जयंती द्वार का किया उद्घाटन

रोहतक। एमडीयू के स्वर्ण जयंती द्वार का रिबन काटकर लोकार्पण करते सीजेआई न्यायमूर्ति सूर्यकांत व मौजूद पंजाब एंड हरियाणा हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस शील नागू, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह, डीसी सचिन गुप्ता, कुलसचिव डॉ. कृष्णकांत।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय परिसर में नवनिर्मित स्वर्ण जयंती द्वार का भव्य लोकार्पण भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने किया। लोकार्पण अवसर पर न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया और परिसर के हरित एवं स्वच्छ वातावरण की सराहना की। करीब 1.25 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित यह स्वर्ण जयंती द्वार झज्जर बाईपास की ओर स्थापित किया गया है, जिससे विश्वविद्यालय में प्रवेश और निकास की व्यवस्था अधिक सुव्यवस्थित और सुगम होगी।

पगड़ी पहनाकर किया गया मान-सम्मान

जिला बार एसोसिएशन में आयोजित समारोह में पहुंचने पर जिला एवं सत्र न्यायाधीश अजय तेवतिया ने देश के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत को मान-सम्मान का प्रतीक पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने मुख्य न्यायाधीश को स्मृति चिन्ह भेंट किया। जिला एवं सत्र डिवीजन के प्रशासनिक न्यायाधीश विकास सूरी ने मुख्य न्यायाधीश को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। उपायुक्त सचिन गुप्ता ने मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत को जिला प्रशासन की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया। वकीलों द्वारा मुख्य न्यायाधीश को भेंट किये गए उनके चित्र पर न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने हस्ताक्षर किए, जिसे बार रूम में रखा जायेगा। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने अधिवक्तओं को भी सम्बोधित किया।

सुपवा के वीसी डॉ. अमित आर्य को हरियाणा गौरव सम्मान

दादा लखमी चंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स (डीएलसीसुपवा) के कुलपति डॉ अमित आर्य को शनिवार को 'हरियाणा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान को देखते हुए दिया गया। डॉ आर्य कई न्यूज चैनल में संपादक रहने के साथ ही मुख्यमंत्री मनोहर लाल के मीडिया सलाहकार भी रह चुके हैं। डॉ अमित आर्य को 'हरियाणा गौरव सम्मान' बाबा मस्तनाथ यूनिवर्सिटी में आयोजित राष्ट्रीय हास्य कवि सम्मेलन व 'हरियाणा गौरव सम्मान समारोह' के दौरान दिया गया। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत ने उन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया। साल 1994 में पत्रकारिता शुरू करने वाले डॉ आर्य का इस क्षेत्र में 30 वर्ष से अधिक का योगदान है। डीएलसीसुपवा के कुलपति बनने से पहले वे केंद्रीय सूचना मंत्रालय, उत्तर क्षेत्र के सलाहकार रहे हैं। उससे पहले उनके नाम हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल का सबसे लंबे समय तक मीडिया सलाहकार रहने का रिकॉर्ड है। बतौर पत्रकार डॉ आर्य ने कई क्षेत्रीय व राष्ट्रीय चैनल खड़े करने व उनके सफल संचालन की जिम्मेदारी निभाई, जबकि मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार के तौर पर पत्रकारों व सरकार के बीच सेतु का सराहनीय कार्य किया।

सम्मान भत्ता बंद करने के लग रहे थे आरोप, विपक्ष भी था हमलावर

बुजुर्गों को मिली 3200 रुपये पेंशन आया मैसेज, चेहरों पर आई मुस्कान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

तीन लाख रुपये प्रतिवर्ष की आमदनी होने की वजह से जिन बुजुर्गों की नवंबर 2025 की पेंशन पर सरकार ने रोक लगा दी थी, वह शनिवार को उनके खातों में जमा हो गई है। पैसे खाते में आते ही वरिष्ठ नागरिकों के मोबाइल पर मैसेज आया। मैसेज देखकर लाभार्थियों को चेहरों पर मुस्कान आ गई। क्योंकि वे बहुत दिनों से पेंशन के लिए अधिकारियों के यहां इधर से उधर चक्कर काट रहे थे। पेंशन को लेकर सरकार पर भी विपक्ष का इतना दबाव था कि जिन लोगों की पेंशन तीन साल पहले आय ज्यादा होने की वजह से बंद कर दी गई थी, उनकी भी अब जारी कर दी गई है। ऐसे ही जानकारी गांव काहनौर के ओमप्रकाश अरोड़ा ने दी। अरोड़ा ने कहा कि तीन साल से उनकी पेंशन बंद थी, लेकिन आज 14 फरवरी को उनके मोबाइल पर बैंक से मैसेज आया कि 3200 रुपये खाते में जमा हुए हैं। साथ ही संदेश में ये भी उल्लेख किया गया था ये राशि हरियाणा के सामाजिक कल्याण विभाग की तरफ से जमा कराई गई है। इसी प्रकार काहनौर के ही जगदीश ने कहा कि उनके खातों में भी 3200 रुपये जमा होने का मैसेज शनिवार शाम को आया है।

अब महेंद्र दंपति भी खुश

काहनौर के ही महेंद्र सिंह की पेंशन पर सरकार ने ब्रेक लगा दिए थे। वजह थी कि उनके परिवार पहचान पत्र में 4 प्लॉट दर्ज कर दिए गए। जिसकी वजह से आय तीन लाख रुपये से ज्यादा हो गई है। इसलिए सरकार ने पेंशन काट दी। लेकिन शनिवार को इनके अकाउंट में भी 3200 रुपये सरकार ने जमा करा दिए हैं।

रघुबीर के खाते में आए 3200 रुपये

रघुबीर सिंह की भी पेंशन बंद थी। लेकिन इनके बैंक खाते में भी 3200 रुपये जमा हो गए हैं। कारण था कि उम्र के दस्तावेज मैच नहीं कर रहे थे।

पोलंगी डबल मर्डर : गांव में तनावपूर्ण शांति, पुलिस तैनात

पोस्टमार्टम रिपोट में गंभीर चोट के निशान मिले, दोनों भाइयों का हुआ अंतिम संस्कार

रोहतक। गांव पोलंगी में रंजिश के चलते हुई दो सगे भाइयों की हत्या के बाद दूसरे दिन दोनों का पोस्टमार्टम कराया गया। औपचारिकताएं पूरी होने के बाद शव परिजनों को सौंप दिए गए। मृतकों की पहचान कर्मबीर और कुलदीप के रूप में हुई थी, जिनकी गांव में ही तेजधार हथियारों से हमला कर हत्या कर दी गई थी। पुलिस के अनुसार, पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शरीर पर गहरे घावों की पुष्टि हुई है। रिपोर्ट आने के बाद जांच को और मजबूती मिलेगी। मामले में नामजद आरोपियों की तलाश जारी है और कई संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है। उधर, गांव पोलंगी में अब भी तनावपूर्ण शांति बनी हुई है। किसी अप्रिय घटना से बचने के लिए पुलिस बल तैनात है। दोनों भाइयों का अंतिम संस्कार कड़ी सुरक्षा के बीच किया गया। परिवार ने आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है, जबकि पुलिस का कहना है कि दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

डेंटल कॉलेज में एंटी-रैगिंग जागरूकता कार्यक्रम

पीजीआई: रैगिंग के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया

रोहतक। पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के डेंटल कॉलेज में शनिवार को एंटी-रैगिंग जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बीडीएस प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्रों को रैगिंग के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य डॉ. संजय सिंह ने रैगिंग के हानिकारक प्रभावों पर प्रकाश डाला और इसके परिणामों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि रैगिंग एक गंभीर अपराध है और इसके लिए कड़ी सजा का प्रावधान है। डॉ. संजय सिंह ने छात्रों को बताया कि रैगिंग न केवल पीड़ित के लिए, बल्कि उसके परिवार और समाज के लिए भी हानिकारक हो सकती है। उन्होंने छात्रों से अपील की कि वे रैगिंग के खिलाफ जागरूक रहें।

MANSAROVER HOSPITAL
MULTI SUPER SPECIALITY HOSPITAL
NEAR PNB BANK, OPP. VIKAS NAGAR, SONIPAT ROAD, ROHTAK, HARYANA
RECEPTION: 01262-253500, 9053005599, 9254302848
REQUIRES
- BAMS 2
- RMO 2
- PRO 2
- NURSING STAFF 4
- ACCOUNTANT 1
- COMPUTER OPERATOR 2
- RECEPTION 2
- WARD BOY 4
- SWEEPER 2

गांव घुसकानी और खिड़वाली के लोग शोक में डूबे, तीन परिवारों के इकलौते बेटे चले गए

सरपंच का भतीजा भी नहीं बचा, एक की दो माह पहले हुई थी शादी

सोनीपत हादसे ने उजाड़े कई घर, रोहतक के गांवों में पसरा मातम, एक साथ चार दोस्तों का होगा अंतिम संस्कार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

सोनीपत में हुए भीषण सड़क हादसे ने रोहतक जिले के दो गांवों घुसकानी और खिड़वाली को गहरे शोक में डुबो दिया। शुक्रवार को तेज रफ्तार स्कॉर्पियो के पेड़ से टकराने से पांच दोस्तों की मौत हो गई थी। जब की एक युवक गंभीर रूप से घायल है। हादसे की खबर मिलते ही दोनों गांवों में चूल्हे तक नहीं जले और हर घर में मातम छा गया। सात दोस्त अपने आठवें दोस्त संदीप की बहन के ससुराल, गोहाना के गांव भावड़ में 'भात' भरने गए थे। संदीप दिल्ली पुलिस में कार्यरत है। शादी का कार्यक्रम खत्म होने के बाद सभी काली स्कॉर्पियो में लौट रहे थे, तभी भावड़-घडवाल रोड पर वाहन अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पेड़ से जा टकराया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि गाड़ी के परखच्चे उड़ गए। खिड़वाली गांव में चार दोस्तों का एक साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा।

गाड़ी की रफ्तार 100 से ज्यादा

लोगों के अनुसार गाड़ी की स्पीड 100 किमी. प्रति घंटा से अधिक थी। टक्कर की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिस पेड़ से गाड़ी टकराई, उसके तने पर करीब 15 फीट ऊंचाई तक छिलने के निशान मिले। बोनट का हिस्सा ऊपर तक जा लगा होगा। हादसे में चार युवकों की मौके पर मौत हो गई, जबकि एक ने अस्पताल में दम तोड़ा। एक युवक गंभीर है और एक सुरक्षित बच गया। मृतकों की पहचान गोलू उर्फ रोहित (घुसकानी), सागर (घुसकानी), दीपक, साहिल और अंकुश (सभी खिड़वाली) के रूप में हुई है। इनकी उम्र 22 से 28 वर्ष के बीच थी।

खुशियां मातम में बदली

हादसे ने तीन परिवारों के इकलौते बेटों को छीन लिया। घुसकानी निवासी गोलू की दो महीने पहले ही शादी हुई थी। वह परिवार का अकेला बेटा था। उसकी पत्नी, वृद्ध माता-पिता और एक बहन पीछे रह गए हैं। शादी के बाद घर में खुशियों का माहौल था, जो अब शोक में बदल गया। खिड़वाली का दीपक भी परिवार का इकलौता बेटा था। खेती-बाड़ी करने वाले परिवार की सारी उम्मीदें उसी पर टिकी थीं। साहिल भी अपने माता-पिता का अकेला सहारा था। साहिल ने 12वीं तक पढ़ाई की थी और आगे की पढ़ाई व नौकरी की तैयारी कर रहा था। परिजनों के अनुसार वह दो दिन पहले ही काम की तलाश में गया था।

परिजनों के विलाप से माहौल गमगीन

पोस्टमार्टम के लिए शवों को खानपुर मेडिकल कॉलेज लाया गया। बाहर जुटे परिजनों का विलाप सुनकर माहौल और भी गमगीन हो गया। रोते-बिलखते परिजन बार-बार यही कह रहे थे कि काश उस रात गाड़ी की रफ्तार कम होती। स्कॉर्पियो गाड़ी की स्पीड ज्यादा थी। रफ्तार तेज होने की वजह से गाड़ी कंट्रोल नहीं हुई और सीधा पेड़ से जा टकराई। इस दौरान गाड़ी का आधे से ज्यादा हिस्सा पूरी तरह से डैमेज हो गया था।

सागर गाड़ी चला रहा था

हादसे में जान गंवाने वाला सागर गांव घुसकानी के सरपंच का भतीजा था। दो भाइयों में छोटा सागर ग्रेजुएशन कर रहा था और सेल्फ-ड्राइविंग का काम शुरू किया था। हादसे के वक्त वही गाड़ी चला रहा था। परिवार के पास करीब 10 एकड़ जमीन है। गांव में सागर को मिलनसार और जिम्मेदार युवक के रूप में जाना जाता था। अंकुश प्राइवेट नौकरी करता था। उसके पिता का एक साल पहले निधन हो चुका है। परिवार में मां, दादी और बड़ा भाई हैं। चार एकड़ जमीन पर ही घर की गुजर-बसर होती है।

चार का एक साथ होगा अंतिम संस्कार

खिड़वाली गांव में चार दोस्तों का एक साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा। पूरे गांव में शोक की लहर है। भावड़ में चल रहे शादी समारोह में भी हादसे की खबर मिलते ही डीजे बंद कर दिया गया। प्रारंभिक जांच में हाई स्पीड हादसे का कारण प्रतीत हो रही है। जिस पेड़ से गाड़ी टकराई है, उस पर करीब 15 फीट तक छिलने के निशान है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। *-एसीपी राहुल देव जांच अधिकारी*

गैस एजेंसी के पीछे व्यक्ति का शव मिला

रोहतक। कलानौर क्षेत्र में शनिवार सुबह एक व्यक्ति का शव गैस एजेंसी के पीछे पाया गया। सूचना मिलने पर कलानौर थाना पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए शवगृह भेज दिया। मृतक की पहचान वार्ड 11 निवासी राजकुमार पुत्र मनफूल के रूप में हुई। प्राथमिक जांच में संकेत मिले हैं कि राजकुमार ने जहर खाकर आत्महत्या की है। शव के मुंह से झाग निकलने की बात भी सामने आई है। आत्महत्या के पीछे के कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाए हैं। पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है और मृतक के परिजनों से पूछताछ की जा रही है। साथ ही एफएसएल टीम ने मौके से साक्ष्य एकत्रित किए हैं। कलानौर थाना अधिकारी ने बताया कि शव की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद ही जानकारी सार्वजनिक की जाएगी।

- शव के मुंह से झाग निकलने की बात भी सामने आई

शिवम एनक्लेव में आवारा कुत्तों के आतंक से लोगों में दहशत

खतरा : हर गली में 10 से 12 कुत्ते, अकेले पैदल नहीं निकल सकते, खौफ के साये में लोग

हादसे: कुत्तों के अचानक सामने आने से कई बार हादसे हो चुके, कई लोग हो चुके चोटिल, कइयों को काटा

बच्चों में डर: बच्चे अकेले बाहर जाने या खेलने से भी कतराने लगे, घरों में दुबकने को हो रहे मजबूर

कई महिलाओं और बच्चों को काटकर किया घायल
रात के समय तो हालात और भी हो जाते हैं भयावह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर के पोश और घनी आबादी वाले इलाके शिवम एनक्लेव में आवारा कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। कॉलोनीवासियों का कहना है कि पिछले काफी समय से यहां कुत्तों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है, जिससे लोगों का घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है। पैदल चलने वाले राहगीरों, महिलाओं, बच्चों के साथ-साथ साइकिल, स्कूटर और बाइक सवारों के पीछे कुत्तों के झुंड दौड़ पड़ते हैं, जिसके चलते कई बार दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं।

पूर्व प्रधान एडवोकेट विनोद पाहवा ने बताया कि हाल ही में कॉलोनी के पार्क में स्थित मंदिर के पास एक कुत्ते ने कई महिलाओं और बच्चों पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया। इस घटना के बाद प्रशासन को शिकायत भी दी गई, लेकिन अब तक समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो पाया है। लोगों का कहना है कि कुत्ते कभी चलती कारों के पीछे दौड़ पड़ते हैं तो कभी अचानक सामने आ जाते हैं, जिससे वाहन चालकों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। कॉलोनी की लगभग हर गली में 10 से 12 आवारा कुत्ते घूमते रहते हैं। बच्चों में इतना डर बैठ गया है कि वे अकेले बाहर खेलने या किसी काम से जाने से कतराने लगे हैं। रात के समय तो हालात और भी भयावह हो जाते हैं। लोगों का कहना है कि अंधेरा होने के बाद कोई भी व्यक्ति अकेला पैदल घर लौटने की हिम्मत नहीं कर पाता।

कॉलोनीवासियों की प्रशासन से गुहार

कॉलोनीवासी लगातार भय और असुरक्षा के साए में जी रहे हैं। उनका कहना है कि यह समस्या अब विकराल रूप ले चुकी है और यदि समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो कोई बड़ा हादसा भी हो सकता है। पूर्व प्रधान एवं एडवोकेट विनोद पाहवा ने प्रशासन और नगर निगम के अधिकारियों से मांग की है कि शिवम एनक्लेव में आवारा कुत्तों की समस्या का जल्द से जल्द समाधान किया जाए।

हरिभूमि पहल — मेरा शहर मेरी समस्या — सुभाष नगर

तुरंत मिले साफ पानी वरना करेंगे प्रदर्शन

अब सुभाष नगर में गंदा और बदबूदार जल बिगाड़ रहा बच्चों-बुजुर्गों की सेहत

रोहतक। शहर के सुभाष नगर इलाके में पिछले कई दिनों से दूषित पेयजल की सप्लाई ने स्थानीय लोगों की चिंता बढ़ा दी है। कॉलोनीवासियों का आरोप है कि नलों से आ रहा पानी न केवल बदबूदार है, बल्कि उसमें गंदगी भी साफ दिखाई दे रही है। पानी का रंग पीला होने से लोगों में भय का माहौल है। उनका कहना है कि यह पानी पीने योग्य नहीं है, लेकिन मजबूरी में घरेलू उपयोग में लेना पड़ रहा है। लोगों के अनुसार, दूषित पानी की वजह से बच्चों और बुजुर्गों की तबीयत खराब होने लगी है। कई घरों में पेट दर्द, उल्टी और बुखार जैसी शिकायतें सामने आई हैं। यदि समय रहते समस्या का समाधान नहीं किया गया तो हालात और गंभीर हो सकते हैं। कॉलोनीवासियों ने बताया कि वे नियमित रूप से पानी का बिल अदा करते हैं, इसके बावजूद उन्हें स्वच्छ पेयजल नहीं मिल पा रहा। कुछ परिवारों को पीने के लिए बाजार से पानी खरीदना पड़ रहा है, जिससे अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी बढ़ गया है। लोगों ने जन स्वास्थ्य विभाग से मांग की है कि पानी की सप्लाई लाइन की तुरंत जांच कराई जाए और दूषित जलापूर्ति की समस्या का स्थायी समाधान किया जाए।

कई घरों में पेट दर्द, उल्टी और बुखार जैसी शिकायतें आई हैं। यदि समस्या का समाधान नहीं किया गया तो हालात गंभीर होंगे।

कई बार दे चुके शिकायत नहीं हो रहा समाधान

अधिकारियों को शिकायत दे चुके हैं। लेकिन कोई समाधान नहीं हुआ है। अब कॉलोनीवासी अधिकारियों से मुलाकात करेंगे। कर्मचारी पानी के सैंपल भी लेकर गए हैं, लेकिन कोई निवारण नहीं किया गया। पानी की पाइपलाइन की जांच करवाकर उसे ठीक करवाया जाए। -**प्रवीन सहगल,** आरडब्ल्यूए के प्रतिनिधि

रंग भी पीला, स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ पीने के लिए बाजार से मंगवाना पड़ रहा

पानी में बदबू आ रही है। उसका रंग भी पीला है। कई घरों में पीने का पानी बाजार से मंगवाना पड़ रहा है। नियमित रूप से पानी के बिल का भुगतान करते हैं, फिर भी साफ पानी नहीं मिल रहा। यह स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है। -**राज खुराना,** स्थानीय निवासी

दूषित पानी बड़ी बीमारी का बन सकता है कारण, जिला प्रशासन समय रहते ध्यान दे

दूषित पानी के कारण कई लोग बीमार पड़ रहे हैं। खासतौर पर छोटे बच्चों और बुजुर्गों की सेहत पर इसका बेहद बुरा असर पड़ रहा है। हमें डर है कि कहीं यह पानी किसी बड़ी बीमारी का कारण न बन जाए। इसलिए प्रशासन समय रहते इस ओर ध्यान दे। -**हिमांशु पंवार,** स्थानीय निवासी

धूल मिट्टी और गंदगी बढ़ा रही परेशानी

पहले भी इस तरह की समस्या सामने आ चुकी है, लेकिन हर बार अस्थायी समाधान करके मामला शांत कर दिया जाता है। संबंधित अधिकारी मौके पर आकर पानी के सैंपल की जांच कराएं व रिपोर्ट सार्वजनिक करें। यदि जल्द स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था नहीं की गई तो हम प्रदर्शन करेंगे । -**सुंदर जेटली,** स्थानीय निवासी

मेरा शहर, मेरी समस्या कॉलम के जरिये आप भी रखें अपनी बात। अगर सेक्टर, गली-मोहल्ला, वार्ड, गांव और आसपास हैं समस्याओं से परेशान तो इस नंबर 9253681012 पर करें व्हाट्सएप। हम उठाएंगे आपका मुद्दा।

शहर में आज

- ⏭ पीजीआई के सभागार में अर्थोपेडिक्स की वर्कशाप सुबह 10 बजे
- ⏭ जसिया कॉलेज में एनएसएस शिविर सुबह 10 बजे
- ⏭ लाहली में हरियाणा व राजस्थान के मैच का तीसरा दिन
- ⏭ मदवि में रंग महोत्सव का शुभारम्भ।

बिजली कट

- ⏭ सुबह 10.00 से दोपहर 03.00 बजे तक छोटू राम नगर, हनुमान कॉलोनी, सुखपुरा चौक, राजेंद्र नगर, प्रवेश नगर, सूर्य नगर, गोहाना रोड की लाइट बन्द रहेगी।

चेकिंग अभियान: गाड़ियों से उतारी ब्लैक फिल्म

■ यातायात नियम तोड़ने वालों के खिलाफ पुलिस सख्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर में यातायात नियमों की सख्ती से पालना सुनिश्चित कराने के लिए पुलिस ने विशेष चेकिंग अभियान चलाया। अभियान के दौरान विभिन्न स्थानों पर नाकेबंदी कर वाहनों की गहन जांच की गई। इस दौरान कई गाड़ियों के शीशों पर लगी काली फिल्म को मौके पर ही उतरवाया गया। साथ ही नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के करीब एक लाख रुपये के चालान भी किए गए। पुलिस द्वारा यह अभियान शहर के प्रमुख चौक-चौराहों, दिल्ली बाईपास, हिसार रोड, मेडिकल मोड़ और कोर्ट परिसर के आसपास चलाया गया।

रोहतक। जाट कॉलेज के पास गाड़ी के शीशों से काली फिल्म उतारती पुलिस।

सबसे ज्यादा कार्रवाई काली फिल्म लगी गाड़ियों पर

अभियान के दौरान सबसे ज्यादा कार्रवाई काली फिल्म लगी गाड़ियों पर की गई। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार वाहनों के शीशों पर निर्धारित सीमा से अधिक काली फिल्म लगाना अवैध है, क्योंकि इससे अपराध की आशंका बढ़ती है और पहचान में मुश्किल होती है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि कई वाहन चालकों को पहले भी चेतावनी दी जा चुकी थी, लेकिन इसके बावजूद वे नियमों की अनदेखी कर रहे थे। ऐसे में इस बार सख्ती बरतते हुए मौके पर ही फिल्म उतरवाई गई।

बगैर हेलमेट वालों के काटे चालाना

इसके अलावा बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चलाने, सीट बेल्ट न लगाने, गलत दिशा में वाहन चलाने और दस्तावेज पूरे न होने पर भी चालान किए गए। पुलिस के अनुसार कुल मिलाकर लगभग एक लाख रुपये की जुर्माना राशि वसूल की गई। कुछ मामलों में वाहन जब्त भी किए गए, जिनके दस्तावेज अधूरे पाए गए।

नियमों का करें पालन

पुलिस अधिकारियों ने आमजन से अपील की कि वे यातायात नियमों का पालन करें और अनावश्यक जुर्माने से बचें। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी इसी तरह अचानक चेकिंग अभियान जारी रहेंगे। नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

लोगों को जागरूक करना उद्देश्य

यह अभियान केवल चालान काटने के लिए नहीं, बल्कि लोगों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है। सड़क हादसों को रोकने के लिए नियमों की पालना जरूरी है। काली फिल्म के कारण कई बार आपराधिक गतिविधियों को अंजाम देने में आसानी हो जाती है, इसलिए इस पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
-**सुरेंद्र भौरिया,** एसपी रोहतक

निगम ने लिया संज्ञान, गोदाम रोड शांतमई व अग्रसेन चौक से उठाया कूड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर के प्रमुख और व्यस्त इलाकों में लंबे समय से पड़े कचरे की समस्या को हरिभूमि संवाददाता ने प्रमुखता से उठाया था। खबर प्रकाशित होते ही नगर निगम ने मामले का संज्ञान लिया और तुरंत कार्रवाई करते हुए माल गोदाम रोड, शांतमई चौक, अग्रसेन चौक से लगती गलियों, पुरानी आईटीआई क्षेत्र पर जमा कूड़े को उठवा दिया गया है। हाल ही में शहर में कराए गए स्वीपिंग कार्य के बाद मुख्य सड़कें तो चमक गई थीं, लेकिन सड़क किनारों और गलियों में पड़ा कचरा लोगों की परेशानी बना हुआ था। इसी मुद्दे को लेकर हरिभूमि में "सड़कें चमकी, मेरा नंबर कब आएगा" शीर्षक से खबर प्रकाशित की गई थी।

फैल रही थी बदबू

खबर में बताया था कि कैसे सड़कें तो साफ दिख रही हैं, लेकिन दोनों ओर जमा कूड़ा न केवल बदबू फैला रहा है, बल्कि शहर की छवि पर भी सवाल खड़े कर रहा है। खबर के बाद नगर निगम हरकत में आया। सफाई कर्मचारियों और वाहनों को मौके पर भेजकर सड़क किनारों से प्लास्टिक, पॉलिथीन, मिट्टी, पत्ते और घरेलू कचरे के ढेर उठवाए गए।

यह बोले लोग

स्थानीय निवासियों का कहना है कि लंबे समय बाद इलाके में सही मायने में सफाई दिखाई दी है। लोगों ने उम्मीद जताई कि यह केवल एक दिन की कार्रवाई न होकर नियमित सफाई की शुरुआत होगी। उनका कहना है कि कचरा हटने से आवारा पशुओं की आवाजाही भी कम होगी और हादसों का खतरा भी घटेगा। उठाए गए इस मुद्दे ने यह साबित कर दिया कि जनसमस्याओं को अगर सही तरीके और प्रभावी ढंग से सामने लाया जाए, तो समाधान भी संभव है।

खबर संक्षेप

इन्द्रा कॉलोनी में चोरी के मामले में तीन पकड़े

रोहतक। पुलिस ने इन्द्रा कॉलोनी में हुई चोरी की वारदात का पर्दाफाश करते हुए वारदात में शामिल तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी न्यायालय में पेश किए गए और मामले की गहन जांच जारी है। प्रभारी थाना शहर निरीक्षक रमेश कुमार ने बताया कि शिकायतकर्ता रामनाथ, निवासी इन्द्रा कॉलोनी, ने पुलिस को बताया कि 9 फरवरी को वे और उनका भाई ड्यूटी पर गए हुए थे। सुबह घर लौटने पर उन्होंने देखा कि मकान का ताला टूटा हुआ था और अंदर से एलईडी टीवी, सोने की एक चैन, अंगूठी और अन्य आभूषण गायब थे। अज्ञात व्यक्ति रात के समय घर में घुसकर चोरी कर फरार हो गए थे। मामले की जांच मुख्य सिपाही अजित के निर्देशन में की गई।

सरकारी स्कूल से 10 कम्प्यूटर चोरी

महम। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सामान चोरी होने की वारदात सामने आई है। विद्यालय की प्रिंसिपल डॉ. प्रभा सिवाच ने इस संबंध में महम थाना में शिकायत दी है। पुलिस को दी शिकायत में प्राचार्या ने बताया कि रात को किसी अज्ञात व्यक्ति ने प्रिंसिपल ऑफिस, आईटी प्रयोगशाला व एक अन्य कमरे का ताला तोड़कर सामान चोरी कर लिया। जिसमें मोनिटर के साथ 10 कंप्यूटर, बच्चों के चार टैब, सीसीटीवी कैमरे की हार्ड डिस्क, एक प्रिंटर, प्रिंटर का कारटरेज व स्कूल में रखा कुछ रिकॉर्ड व दस्तावेज आदि भी चोरी हो गए। पुलिस शिकायत में बताया कि 23 नवंबर 2023 को भी स्कूल में चोरी हुई थी।

अवैध कब्जे से महिला परेशान, मुख्यमंत्री को शिकायत भेजी

महम। भिवानी स्टैंड चौक पर पुराने बस अड्डे के कॉर्नर पर किए गए अवैध कब्जे से महिला दुकानदार परेशान है। इस संबंध में महिला ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को शिकायत भेजी है। सीएम को दी शिकायत में महम के वार्ड 6 निवासी सुमन देवी पत्नी स्व. अशोक कुमार ने कहा है कि भिवानी स्टैंड महम में हिसार रोड पर उसकी दुकान है। उसके पति की मृत्यु के बाद उसने उसमें ब्यूटी पार्लर की दुकान कर रखी है। उसकी दुकान के साथ लगती जमीन पर मिष्ठान भंडार के मालिक ने अवैध कब्जा कर लिया है। वह इस संबंध में नगर पालिका सचिव नवीन नांदल को भी शिकायत कर चुकी है। लेकिन नगर पालिका ने वहां से अवैध कब्जा नहीं हटवाया।

आक्रोश में हजपा, कुंडू से 5 करोड़ की रंगदारी मांगने वाले को जल्द पकड़ें

■ बलराज कुंडू के समर्थकों में आक्रोश, महम में हुई जनसेवक पार्टी कार्यकर्ताओं की मीटिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महम

हरियाणा जनसेवक पार्टी नेता एवं पूर्व विधायक बलराज कुंडू शनिवार को महम स्थित जनसेवक कार्यालय पहुंचे। इस दौरान उन्होंने वर्कर मीटिंग को संबोधित किया। बलराज कुंडू से पांच करोड़ रुपए की रंगदारी की वारदात से उनके समर्थक गुस्से में दिखाई दिए। मीटिंग के दौरान हजपा कार्यकर्ताओं में विशेष आक्रोश देखने को मिला। आक्रोशित कार्यकर्ताओं ने कहा कि वे अपने नेता को खरोंच तक नहीं आने देंगे। चाहे उसके लिए उन्हें अपनी जान की बाजी क्यों न लगानी पड़े। पंचायत समिति महम के पूर्व चेयरमैन एवं अजायब गांव के पूर्व सरपंच समुंद्र सिंह ने एक प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव में कहा गया कि यदि सरकार एक हफ्ते में रंगदारी के आरोपी को गिरफ्तार कर लेती है तो ठीक है। वरना एक सप्ताह बाद चौबीसी चबूतरे पर सर्वजातिय महापंचायत का आयोजन किया जाएगा। सभी कार्यकर्ताओं ने पुरजोर बुलंद आवाज के साथ प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पास कर दिया। कार्यकर्ताओं ने बलराज कुंडू को आश्वस्त करके कहा कि सभी साथी उनके साथ तन-मन-धन से खड़े हैं। कार्यकर्ताओं ने कहा कि समाज में जंगल राज हो गया है , जब बलराज कुंडू जैसे समाजसेवी से फिरौती की मांग की जा सकती है तो आम जनता का क्या होगा ? कुंडू खाप के अध्यक्ष इंद्रजीत ने भी बैठक को संबोधित किया।

अखिल भारतीय गोशाला पहरावर में वार्षिक उत्सव का शुभारंभ

रोहतक। अखिल भारतीय गोशाला पहरावर में वार्षिक उत्सव का भव्य शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन सांग प्रस्तुत कर रहे विष्णुदत्त द्वारा फूलसिंह नौटंकी के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर लोगों ने गोमाता की सेवा में उदार दान दिया। प्रधान नरेश शर्मा ने बताया कि कुल 8,92,792 रुपए दान में आए और 4 फरवरी से 12 फरवरी तक कुल दान राशि 1,35,37,796 रुपए हो चुकी है। कार्यक्रम 15 फरवरी तक विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ जारी रहेगा। इस मौके पर ओमप्रकाश मास्टर, शिवकुमार मास्टर, राजू, सेवाराम, बिजेंद्र ब्रह्मचारी, रमेश राणा, गोविंद, सोनू, हरिओम, दीनू, चंद्रे बलियाना, वासुदेव, चंद्रभान भालोठ, रामप्रकाश, जयभगवान, विक्रम बहादुरगढ़ और प्रेम सिंह आदि मौजूद रहे।

काल सिद्ध पीठ सांपला में 11 दिवसीय अखंड महायज्ञ में शामिल हुए समर्थगुरु औलिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

सांपला स्थित काल सिद्ध पीठ बाबा कालीदास धाम आश्रम में चल रहे 11 दिवसीय अखंड महायज्ञ की पावन वेला में ओशोधारा मुरथल के संस्थापक समर्थगुरु सिद्धार्थ औलिया शनिवार को विशेष रूप से शामिल हुए। इस अवसर पर सिद्ध योगी अंतरराष्ट्रीय संत, यज्ञ सम्राट महामंडलेश्वर स्वामी कालीदास जी महाराज ने समर्थ गुरुदेव के लिए विशेष हवन किया तथा उनका सम्मान भी किया। कार्यक्रम के दौरान समर्थगुरु संघ रोहतक ने दोनों विश्व प्रसिद्ध संतों के प्रति अहोभाव प्रकट किया। यह जानकारी समर्थगुरुधारा प्रेस मीडिया कोऑर्डिनेटर संदीप नैन ने दी।

युवा सर्जन कुछ नया सीख मरीज को पहुंचाएं फायदा : डॉ. एचके अग्रवाल

कॉन्फ्रेंस से चिकित्सा क्षेत्र में नए शोध व उपचार विधियों को मिलेगा प्रोत्साहन

■ आधुनिक तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

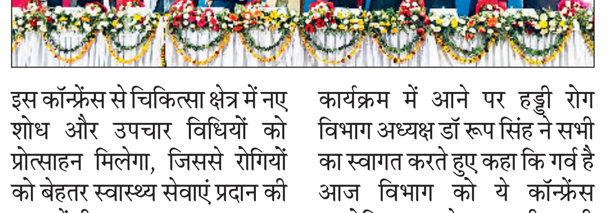

पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के सुश्रुत सभागार में हड्डी रोग विभाग की वार्षिक कॉन्फ्रेंस का शनिवार को औपचारिक रूप से शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एच के अग्रवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

कुलपति डॉ एच के अग्रवाल ने अपने भाषण में हड्डी रोग में नवाचारों और आधुनिक तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस कॉन्फ्रेंस से चिकित्सा क्षेत्र में नए शोध और उपचार विधियों को प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे रोगियों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा सकेंगी।

उन्होंने कहा, हमें नवीनतम तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता है ताकि हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकें। उन्होंने युवा सर्जनों से आग्रह किया कि वे यहां नए तरीके सीखें, अपने प्रश्न पूछें और आम जनता को फायदा पहुंचाएं। कार्यक्रम में आने पर हड्डी रोग विभाग अध्यक्ष डॉ रूप सिंह ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि गर्व है आज विभाग को ये कॉन्फ्रेंस आयोजित करके। पहली बारी कैडेवर पर 6 वर्कशॉप आयोजित की गई। कल पहली आर्थो विभाग की एलुमनाई मीट आयोजित की गई। 200 एब्सट्रैक्ट प्रेजेंट किए गए कॉन्फ्रेंस के दौरान। डॉ रूप सिंह ने कहा कि इस कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य किताबों से परे शिक्षा देना और प्रैक्टिकल ज्ञान प्रदान करना है क्योंकि आजकल युवा यूट्यूब से सीखना चाहते हैं।

हड्डी रोग विभाग अध्यक्ष डॉ रूप सिंह ने बताया कि कॉन्फ्रेंस में हिप और लोअर लिंब (निचले अंग) से संबंधित नवीनतम शोध और उपचार विधियों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में तीन प्रमुख सत्र आयोजित किए गए, जिनमें ट्रॉमा सेशन, नी सेशन और प्राइमरी हिप आर्थ्रोप्लास्टी सिम्पोजियम शामिल थे। ट्रॉमा सेशन में पॉलीट्रॉमा, इंटरट्रोकेंटरिक फ्रैक्चर, फेमर नेक फ्रैक्चर और पाइलॉन फ्रैक्चर जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए। इस सेशन के चेयरपर्सन डॉ एस के मोदी, डॉ संसार चंद शर्मा, डॉ एम जी वशिष्ट और डॉ रविंदर कांत मनोचा थे, जबकि मॉडरेटर डॉ उमेश यादव थे।

हड्डी रोग विशेषज्ञों का राष्ट्रीय सम्मेलन

डॉ रूप सिंह ने बताया कि नी सेशन में बायोमैकेनिक्स, पीसीएल सर्जरी, मेनिस्कस संबंधी समस्याएं और एसीएल पुनर्निर्माण पर चर्चा हुई। सेशन की अध्यक्षता डॉ के सी मुद्गिल, डॉ प्रतीक कुमार गुप्ता, डॉ राजू ईस्वरण और डॉ प्रवीण चावला ने की, मॉडरेटर डॉ अजय शेओरन थे। प्राइमरी हिप आर्थ्रोप्लास्टी सिम्पोजियम में हिप आर्थ्रोप्लास्टी के विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श हुआ, जिसमें एंकायलोजिंग स्पॉन्डिलाइटिस में टीएचआर और स्पाइनो-पेल्विक संतुलन शामिल थे। चेयरपर्सन डॉ आर के गुप्ता, डॉ के डी शर्मा, डॉ अनिल राणे और डॉ ईश्वर बोहरा थे, मॉडरेटर डॉ जितेंद्र वाधवानी थे। कार्यक्रम के अंत में सभी का धन्यवाद करते हुए डॉ आशीष देवगन ने बताया कि कॉन्फ्रेंस में देश भर के हड्डी रोग विशेषज्ञों ने भाग लिया और जटिल चिकित्सा मामलों पर अपने अनुभव साझा किए। इससे चिकित्सकों को नवीनतम तकनीकों और उपचारों की जानकारी मिली, जो भविष्य में रोगियों के इलाज में सहायक होगी।

इन्हें मिला लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

कॉन्फ्रेंस के दौरान 2 डॉक्टरों को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया। नॉर्थ जोन लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड के बारे में डॉ अमनदीप बक्शी ने बताया कि ये अवार्ड डॉ एस एस यादव, डॉ नरेंद्र कुमार मग्गू को प्रदान करके सम्मानित किया गया।

---

80 हजार की ठगी का आरोपी गिरोह के साथ गिरफ्तार

रोहतक। पुलिस ने 80 हजार रुपये की ठगी की वारदात का पर्दाफाश करते हुए गिरोह में शामिल आरोपी हरिप्रकाश निवासी राजस्थान को गिरफ्तार किया है। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया। मामले की जांच जारी है। प्रभारी थाना अर्बन एस्टेट उप-नि. कमलजीत ने बताया, शिकायतकर्ता प्रशांत, निवासी सेक्टर-2 रोहतक, ने पुलिस को बताया कि 5 फरवरी को उन्होंने फेसबुक पर गाय का विज्ञापन देखा। विज्ञापन में दिए नंबर पर कॉल करने पर आरोपी ने प्रशांत को स्कैनर पर 50 हजार रुपये और 30 हजार रुपये ट्रांसफर करने के लिए कहा। कुछ समय बाद प्रशांत को एहसास हुआ कि उसके साथ धोखाधड़ी हुई है। मामले की जांच स. उप.नि. विकास के निर्देशन में अमल में लाई गई।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

तेज रफ्तार से थका मन चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम

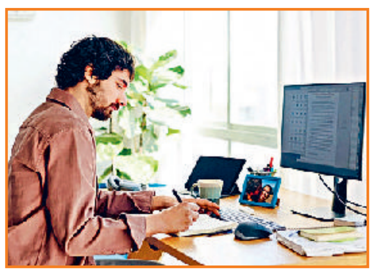

लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

दुनिया इसलिए थकी रफ्तार से: द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से लगातार दुनिया तेज रफ्तार जीवनशैली को कामयाबी और स्टेटस सिंबल की तरह पेश करती रही है, तो सवाल है फिर आखिर 21वीं सदी के दो दशक बाद आकर दुनिया का तेज रफ्तारी से मोहभंग क्यों हो गया? इसके पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। कोविड के बाद लोगों को जिंदगी की असलियत का एहसास हो गया है कि चाहे जितनी बड़ी कामयाबी हो, चाहे जितनी सुख-सुविधाएं हों और चाहे जितनी संपन्नता हो, लेकिन अगर प्रकृति खफा हो गई, तो जिंदगी की कोई कीमत नहीं रहती। पल भर में सारी कामयाबी, सारी तेज रफ्तारी धरी की धरी रह जाती है। कोविड ने एहसास कराया कि जीवन अस्थायी है। लोग पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज

रफ्तारी से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दुनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

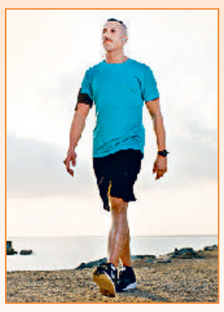

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी नो प्लान डे।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

ह्यूमन नेचर
शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत

ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में

अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

वासंती दोहे
घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुलहन-सा शृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज ला री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर डोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा, **मूल्य:** 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल

शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम आंध्र प्रदेश: यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम तमिलनाडु: तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई तमिलनाडु: तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै तमिलनाडु: मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निमाण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है, जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति

अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सव: 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्व: लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्व: लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लामा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पान: लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रम: लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ढ़म और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन

प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट के कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंद: फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स से: शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉडरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांड: हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुक: शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इनसे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

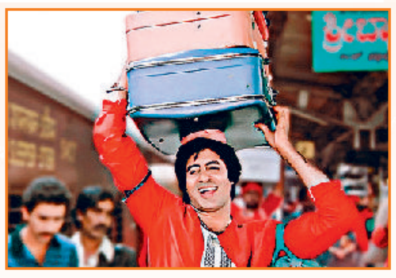
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड

अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नाम: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेन: बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शन: पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्य: फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

ट्रेन पर आधारित गीत: ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *